२. चीफ की दावत

– *भीष्म साहनी*

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ की दावत थी ।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुरसत न थी । पत्नी और पति चीजों की फेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे ।

आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी पूरी होने लगी । कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन,फूल सब बरामदे में पहुँच गए । अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा । तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ?

इस बात की ओर न उनका और न ही उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था । मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूमकर अंग्रेजी में बोले-''माँ का क्या होगा ?''

श्रीमती काम करते-करते ठहर गईं और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं, ''इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो । रात भर बेशक वहीं रहें । कल आ जाएँ ।''

शामनाथ सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, ''नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो । पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था । माँ से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ । मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे । इससे पहले ही अपने काम से निबट लें ।''

सुझाव ठीक था । दोनों को पसंद आया । मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं, ''जो वह सो गईं और नींद में खर्राटे लेने लगीं, तो ? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खाएँगे ।''

''तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाजा बंद कर लें । मैं बाहर से ताला लगा दूँगा या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जाकर सोएँ नहीं, बैठी रहें, और क्या ?''

''और जो सो गईं, तो ? डिनर का क्या मालूम कब तक चले !''

शामनाथ कुछ खीझ उठे, हाथ झटकते हुए बोले, ''अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं । तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी !''

परिचय

जन्म : १९१५, रावलपिंडी (अविभाजित भारत)

मृत्यु : २००३

परिचय : बहुमुखी प्रतिभा के धनी भीष्म साहनी ने सामाजिक विषमता, संघर्ष, मानवीय करुणा, मानवीय मूल्य, नैतिकता को अपनी लेखनी का आधार बनाया । आपने अपनी रचनाओं में नारी के व्यक्तित्व विकास, आर्थिक स्वतंत्रता, स्त्री शिक्षा और उसकी सम्मानजनक स्थिति का समर्थन किया है । प्रगतिशील दृष्टि के कारण आप मूल्यों पर आधारित ऐसी भावना के पक्षधर हैं जो मानवमात्र के प्रति प्रतिबद्ध है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'निशाचर' (कहानी संग्रह), 'झरोखे', 'तमस', 'कुंतो', 'नीलू, नीलिमा, नीलोफर', 'मय्यादास की माड़ी', (उपन्यास), 'कबिरा खड़ा बाजार में', माधवी (नाटक), 'आज के अतीत' (आत्मकथा) आदि ।

गद्य संबंधी

सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों पर पारखी नजर रखने वाले भीष्म साहनी जी ने इस पाठ में अपने बुजुर्गों को लेकर हीन दृष्टिकोणवालों पर करारा प्रहार किया है । अपनी उन्नति के लिए 'चीफ' की खुशामद करना, उनकी हाँ में हाँ मिलाना, दिखावा करना आदि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए लोककला-हस्तकला के समादर पर कहानीकार ने बड़े ही प्रभावी एवं मार्मिक ढंग से कलम चलाई है ।

‘‘वाह ! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ ? तुम जानो और वह जानें ।’’

मिस्टर शामनाथ चुप रहे । यह मौका बहस का न था, समस्या का हल ढूँढ़ने का था । उन्होंने घूमकर माँ की कोठरी की ओर देखा । कोठरी का दरवाजा बरामदे में खुलता था । बरामदे की ओर देखते हुए झट-से बोले, ‘‘मैंने सोच लिया है,’’और उन्हीं कदमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं । सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था । बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाए ।

‘‘माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना । मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएँगे । जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना ।’’

‘‘अच्छा बेटा !’’

‘‘और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे । उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना फिर जब हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना ।’’

माँ अवाक, बेटे का चेहरा देखने लगीं । फिर धीरे-से बोलीं, ‘‘अच्छा, बेटा !’’

‘‘और माँ, आज जल्दी सो नहीं जाना । तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है ।’’

माँ लज्जित-सी आवाज में बोलीं, ‘‘क्या करूँ बेटा, मेरे बस की बात नहीं है । जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले पाती ।’’

मिस्टर शामनाथ ने इंतजाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़-बुन खत्म नहीं हुई । जो चीफ अचानक उधर आ निकला, तो ? आठ-दस मेहमान होंगे, देशी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है । क्षोभ और क्रोध में वह फिर झुँझलाने लगे । एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोले, ‘‘आओ माँ, इसपर जरा बैठो तो ।’’

माँ माला सँभालती, पल्ला ठीक करती उठीं और धीरे-से कुर्सी पर आकर बैठ गईं ।

‘‘यूँ नहीं, माँ टाँगें ऊपर चढ़ाकर नहीं बैठते । यह खाट नहीं है ।’’

माँ ने टाँगें नीचे उतार लीं ।

‘‘और खुदा के वास्ते नंगे पाँव नहीं घूमना । न ही वह खड़ाऊँ पहनकर सामने आना । किसी दिन तुम्हारी वह खड़ाऊँ उठाकर मैं बाहर फेंक दूँगा ।’’

संभाषणीय

विभिन्न शुभ अवसरों पर बनाए जाने वाले पकवानों के बारे में आपस में चर्चा करके सूची बनाइए ।

माँ चुप रही ।

''कपड़े कौन-से पहनोगी, माँ ?''

''जो हैं, वही पहनूँगी, बेटा ! जो कहो, पहन लूँ ।''

मिस्टर शामनाथ अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे और माँ के कपड़ों की सोचने लगे । शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे । घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था । खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछें, किस रंग के परदे लगाए जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज की हो... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात्कार माँ से हो गया तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े । माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले, ''तुम सफेद कमीज और सफेद सलवार पहन लो, माँ । पहन के आओ तो, जरा देखूँ ।''

माँ धीरे-से उठीं और अपनी कोठरी में कपड़े पहनने चली गईं ।

''यह माँ का झमेला ही रहेगा,'' उन्होंने फिर अंग्रेजी में अपनी पत्नी से कहा, ''ढंग की बात भी हो तो कोई ! अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गई, चीफ को बुरा लगा तो सारा मजा जाता रहेगा ।''

माँ सफेद कमीज और सफेद सलवार पहनकर बाहर निकलीं । छोटा-सा कद, सफेद कपड़ों में लिपटा, छोटा-सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुए बाल पल्ले की ओट में छिपा पाए थे । पहले से कुछ ही कम कुरूप नजर आ रही थीं ।

''चलो ठीक है । कोई चूड़ियाँ-वूड़ियाँ हों तो वह भी पहन लो । कोई हर्ज नहीं ।''

''चूड़ियाँ कहाँ से लाऊँ, बेटा ? तुम तो जानते हो, सब गहने तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए ।'' यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा । तिनककर बोला, ''यह कौन-सा राग छेड़ दिया, माँ ! सीधा कह दो, नहीं हैं गहने, बस ! इससे पढ़ाई-वढ़ाई का क्या ताल्लुक है ? गहने बिके तो कुछ बनकर ही आया हूँ, निरा लँडूरा तो नहीं लौट आया । जितना दिया था, उससे दुगुना ले लेना ।''

''मेरी जीभ जल जाए, बेटा, तुमसे गहना लूँगी ? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया । जो होते, तो लाख बार पहनती !''

साढ़े पाँच बज चुके थे । अभी मिस्टर शामनाथ को खुद भी नहा-धोकर तैयार होना था । श्रीमती कब की अपने कमरे में जा चुकी थी । शामनाथ जाते हुए एक बार फिर माँ को हिदायत करते गए, ''माँ, रोज की तरह गुमसुम बन के नहीं बैठी रहना । अगर साहब इधर आ निकलें और कोई बात पूछें तो ठीक तरह से बात का जवाब देना ।''

पठनीय

प्रेमचंद जी का कहानी संग्रह 'मानसरोवर' भाग १ से ८ तक के किसी एक भाग से कोई कहानी पढ़कर कक्षा में संक्षेप में उसका आशय सुनाइए ।

‘‘मैं न पढ़ी, न लिखी, बेटा, मैं क्या बात करूँगी। तुम कह देना, माँ अनपढ़ है, कुछ जानती-समझती नहीं। वह नहीं पूछेगा।’’

सात बजते-बजते माँ का दिल धक-धक करने लगा। अगर चीफ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देंगी। अंग्रेज को तो दूर से ही देखकर वह घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाएँ। मगर बेटे के आदेश को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टाँगें लटकाए वहीं बैठी रहीं।

शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी। मेम साहब को परदे पसंद आए थे, सोफा कवर का डिजाइन पसंद आया था, कमरे की सजावट पसंद आई थी। इससे बढ़कर क्या चाहिए। साहब तो चुटकुले और कहानियाँ कहने लग गए थे। दफ्तर में जितना रोब रखते थे, यहाँ पर उतने ही दोस्तपरवर हो रहे थे और उनकी स्त्री, काला गाउन पहने, गले में सफेद मोतियों का हार, सेंट और पावडर की महक से ओत-प्रोत, कमरे में बैठी सभी देशी स्त्रियों की आराधना का केंद्र बनी हुई थीं। बात-बात पर हँसतीं, बात-बात पर सिर हिलातीं और शामनाथ की स्त्री से तो ऐसे बातें कर रहीं थीं, जैसे उनकी पुरानी सहेली हो।

इसी रौ में साढ़े दस बज गए। वक्त कब गुजर गया पता ही न चला।

आखिर सब लोग खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले। आगे-आगे शामनाथ रास्ता दिखाते हुए, पीछे चीफ और दूसरे मेहमान।

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं, बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ झूल रहा था। मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएँ से बाएँ झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।

माँ को देखते ही देशी अफसरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में

रेडियो से प्रसारित होने वाला कोई ‘हिंदी कार्यक्रम’ सुनिए।

चीफ ने धीरे-से-कहा- 'अरे ! पूअर डियर' !

माँ हड़बड़ा के उठ बैठीं । सामने खड़े इतने लोगों को देखकर ऐसी घबराईं कि कुछ कहते न बना । झट से पल्ला सिर पर रखती हुई खड़ी हो गईं और जमीन को देखने लगीं । उनके पाँव लड़खड़ाने लगे और हाथों की उँगलियाँ थर-थर काँपने लगीं ।

''माँ, तुम जाके सो जाओ, तुम क्यों इतनी देर तक जाग रही थीं ?'' और खिसियाई हुई नजरों से शामनाथ चीफ के मुँह की ओर देखने लगे ।

चीफ के चेहरे पर मुस्कराहट थी । वह वहीं खड़े-खड़े बोले, ''नमस्ते !''

माँ ने झिझकते, अपने में सिमटते हुए दोनों हाथ जोड़े मगर एक हाथ दुपट्टे के अंदर माला को पकड़े हुए था, दूसरा बाहर । ठीक तरह से नमस्ते भी न कर पाईं । शामनाथ इसपर भी खिन्न हो उठे ।

इतने में चीफ ने अपना दायाँ हाथ, हाथ मिलाने के लिए माँ के आगे किया । माँ और भी घबरा उठीं ।

''माँ, हाथ मिलाओ ।''

पर हाथ कैसे मिलातीं ? दायें हाथ में तो माला थी । घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दायें हाथ में रख दिया । शामनाथ दिल-ही-दिल में जल उठे । देशी अफसरों की स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं ।

''यूँ नहीं माँ ! तुम तो जानती हो, दायाँ हाथ मिलाया जाता है । दायाँ हाथ मिलाओ ।''

मगर तब तक चीफ माँ का बायाँ हाथ ही बार-बार हिलाकर कह रहे थे-''हौ डू यू डू ?''

''कहो माँ, मैं ठीक हूँ, खैरियत से हूँ ।''

माँ कुछ बड़बड़ाईं ।

''माँ कहती हैं, मैं ठीक हूँ ।

कहो माँ, हौ डू यू डू ।''

माँ धीरे-से सकुचाते हुए बोलीं -''हौ डू डू...''

एक बार फिर कहकहा उठा ।

वातावरण हलका होने लगा । साहब ने स्थिति सँभाल ली थी । लोग हँसने-चहकने लगे थे । शामनाथ के मन का क्षोभ भी कुछ-कुछ कम होने लगा था ।

साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे और माँ सिकुड़ी जा रही थीं ।

शामनाथ अंग्रेजी में बोले, ''मेरी माँ गाँव की रहने वाली हैं । उम्र भर गाँव में रही हैं । माँ आपसे लजा रही होगी ।''

साहब इसपर खुश नजर आए । बोले, ''सच ? मुझे गाँव के लोग बहुत

'स्वार्थ के अंधेपन से व्यक्ति अपनों से दूर हो जाता है' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

पसंद हैं, तब तो तुम्हारी माँ गाँव के गीत और नाच भी जानती होंगी ?'' चीफ खुशी से सिर हिलाते हुए माँ को टक-टकी बाँधे देखने लगे।

माँ धीरे से बोलीं, ''मैं क्या गाऊँगी, बेटा ! मैंने कब गाया है ?''

''वाह, माँ ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है ?'' शामनाथ बोल पड़े।

''साहब ने इतनी रीझ से कहा है, नहीं गाओगी, तो साहब बुरा मानेंगे।''

''मैं क्या गाऊँ बेटा, मुझे क्या आता है ?''

''वाह ! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। पत्तर अनाराँ दे ...''

देशी अफसर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियाँ पीटीं। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखतीं, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को।

इतने में बेटे ने गंभीर आदेश भरे लहजे में कहा, ''माँ !''

इसके बाद हाँ या ना का सवाल ही न उठता था। माँ बैठ गईं और क्षीण दुर्बल, लरजती आवाज में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगीं–

'हरिया नी माये, हरिया नी भैणे
हरिया ते भागी भरिया है !'

देशी स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस उठीं। तीन पंक्तियाँ गा के माँ चुप हो गईं।

बरामदा तालियों से गूँज उठा। साहब तालियाँ पीटना बंद ही न करते थे। शामनाथ की खीझ प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। वृद्ध माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था।

तालियाँ थमने पर साहब बोले, ''पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है ?'' शामनाथ खुशी में झूम रहे थे। बोले, ''ओ, बहुत कुछ साहब ! मैं आपको एक सेट उन चीजों का भेंट करूँगा। आप उन्हें देखकर खुश होंगे।''

मगर साहब ने सिर हिलाकर अंग्रेजी में फिर पूछा, ''नहीं, मैं दूकानों की चीज नहीं माँगता। पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं ?''

शामनाथ कुछ सोचते हुए बोले, ''लड़कियाँ गुड़ियाँ बनाती हैं, औरतें फुलकारियाँ बनाती हैं।''

''फुलकारी क्या है ?''

शामनाथ फुलकारी का मतलब समझाने की असफल चेष्टा करने के बाद माँ से बोले, ''क्यों, माँ, कोई पुरानी फुलकारी घर में है ?''

माँ चुपचाप अंदर गईं और अपनी पुरानी फुलकारी उठा लाईं।

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) कारण लिखिए :

अ. माँ ने गीत सुनाया –

आ. देशी स्त्रियाँ खुश हो गईं –

(२) लिखिए :

१.

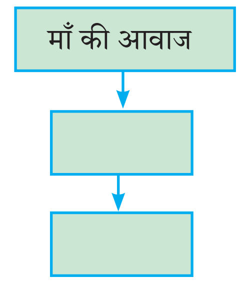

२.

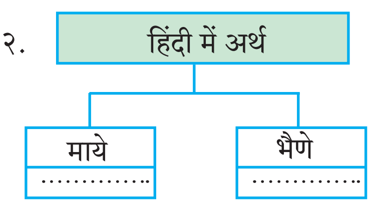

(३) सूचना के अनुसार परिवर्तन करके पुनः लिखिए :

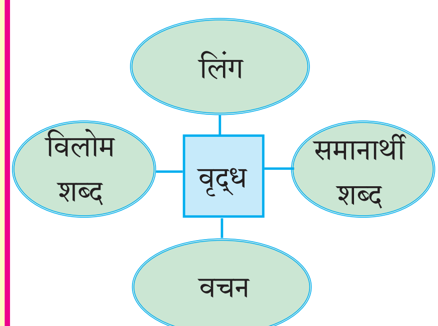

(४) 'वृद्धों को दया नहीं स्नेहभरा व्यवहार चाहिए', इसपर अपने विचार लिखिए।

साहब बड़ी रुचि से फुलकारी देखने लगे । पुरानी फुलकारी थी, जगह-जगह से उसके धागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा था । साहब की रुचि को देखकर शामनाथ बोले, ''यह फटी हुई है, साहब, मैं आपको नई बनवा दूँगा । माँ बना देंगी । क्यों, माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसंद है, इन्हें ऐसी ही फुलकारी बना दोगी न ?''

माँ चुप रहीं । फिर डरते-डरते धीरे-से बोलीं, ''अब मेरी नजर कहाँ है, बेटा ? बूढ़ी आँखें क्या देखेंगी ?''

मगर माँ का वाक्य बीच ही में तोड़ते हुए शामनाथ साहब को बोले, ''माँ फुलकारी जरूर बनाएँगी । आप उसे देखकर खुश होंगे ।''

साहब ने सिर हिलाया, धन्यवाद किया और खाने की मेज की ओर बढ़ गए । बाकी मेहमान भी उनके पीछे-पीछे हो लिए ।

जब मेहमान बैठ गए और माँ पर से सबकी आँखें हट गईं, तो माँ धीरे-से कुर्सी पर से उठीं और सबसे नजरें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गईं ।

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे । वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछतीं पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आए हों । माँ ने दिल को बहुतेरा समझाया, हाथ जोड़े भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बंद कीं, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे ।

आधी रात का वक्त होगा । मेहमान भरपेट खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे । माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था । मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर पर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों के खनकने की आवाज आ रही थी । तभी सहसा माँ की कोठरी का दरवाजा जोर से खटकने लगा ।

''माँ, दरवाजा खोलो ।''

माँ का दिल बैठ गया । हड़बड़ाकर उठ बैठीं । क्या मुझसे फिर कोई भूल हो गई ? माँ कितनी देर से अपने-आपको कोस रही थीं कि क्यों उसे नींद आ गई, क्यों वह ऊँघने लगी । क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया ? माँ उठीं और काँपते हाथों से दरवाजा खोल दिया ।

दरवाजा खुलते ही शामनाथ आगे बढ़ आए और माँ को आलिंगन में भर लिया ।

''ओ माँ ! तुमने तो आज रंग ला दिया ! साहब तुमसे इतना खुश हुए कि क्या कहूँ । ओ माँ ! माँ !''

माँ की छोटी-सी काया सिमटकर बेटे के आलिंगन में छिप गई । माँ की आँखों में फिर आँसू आ गए । उन्हें पोंछती हुई धीरे-से बोलीं, ''बेटा, तुम मुझे हरिद्वार भेज दो । मैं कबसे कह रही हूँ ।''

शामनाथ के माथे पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे । उनकी बाँहें माँ के शरीर पर से हट आईं ।

''क्या कहा, माँ ? यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड़ दिया ?''

शामनाथ का क्रोध बढ़ने लगा था, बोलते गए-''तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो, ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता ।''

''नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो । मैंने अपना खा-पहन लिया । अब यहाँ क्या करूँगी । जो थोड़े दिन जिंदगानी के बाकी हैं, भगवान का नाम लूँगी । तुम मुझे हरिद्वार भेज दो !''

''तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा ? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है ।''

''मेरी आँखें अब नहीं हैं बेटा, जो फुलकारी बना सकूँ । तुम कहीं और से बनवा लो । बनी-बनाई ले लो ।''

''माँ, तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी । मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ? जानती नहीं, साहब खुश होगें, तो मुझे तरक्की मिलेगी !''

माँ चुप हो गईं । फिर बेटे के मुँह की ओर देखती हुई बोलीं-''क्या तेरी तरक्की होगी ? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगें ? क्या उन्होंने कुछ कहा है ?''

''कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश हो गए हैं । कहते थे, जब तुम्हारी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेंगी, तो मैं देखने आऊँगा कि कैसे बनाती हैं । जो साहब खुश हो गए, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अधिकारी बन सकता हूँ ।''

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उसका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हलकी-हलकी चमक आने लगी ।

''तो तेरी तरक्की होगी, बेटा ?''

''तरक्की क्या यूँ ही हो जाएगी ? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेंगे, वरना उनकी खिदमत करने वाले कम थोड़े हैं ?''

''तो मैं बना दूँगी बेटा, जैसे बन पड़ेगा बना दूँगी ।''

और माँ दिल-ही-दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं और मिस्टर शामनाथ, ''अब सो जाओ, माँ'' कहते हुए अपने कमरे की ओर घूम गए ।

—— ० ——

शब्द संसार

फेहरिस्त स्त्री.सं.(अ.) = सूची
सुभीता पुं.सं.(दे.) = सुगमता, सहूलियत, सुविधा
ताल्लुक पुं.सं.(अ.) = संबंध
हिदायत स्त्री.सं.(अ.) = निर्देश, सूचना
लरजती क्रि.(फा.) = काँपती, थरथराती
इकरार पुं.सं.(अ.) = स्वीकार
उधेड़बुन स्त्री.सं.(हिं.) = सोच-विचार, ऊहापोह

मुहावरे

टाँग अड़ाना = व्यर्थ में हस्तक्षेप करना, बाधा डालना
दिल धड़कना = चिंता या भय से व्याकुल होना
टक-टकी बाँधना = एकटक देखना
दिल बैठना = निराश होना
माथे पर बल पड़ना = गुस्सा आना, चिंतित होना
मुँह खिलना = प्रसन्न होना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

कोठरी के बाहर से शामनाथ ने देखा

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

पार्टी के लिए की गईं तैयारियाँ

(३) कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

१. मेम साहब को पसंद आईं चीजें

२. मेम साहब की पोशाक

(४) कारण लिखिए :

१. माँ चूड़ियाँ नहीं पहन सकतीं -------
२. माँ को उनकी सहेली के घर भेजना पसंद न था -------
३. शामनाथ क्रोधित हो उठे -------
४. माँ ने फुलकारी बनाने के लिए हाँ कर दी -------

(५) बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ ने देखी माँ की स्थिति

(६) भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए :

१. ग्रहण
२. पद
३. अंबर
४. वार

अभिव्यक्ति ‘वृद्‌धाश्रमों की बढ़ती संख्या’ पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) वाक्य शुद्धीकरण :

१. उसका साफ सफाई, सुरक्षा को पक्की कर लिया ।

२. पाल कितनी उँचा होगा इसका भी अन्दाज ले लीया गए हैं ।

३. भीख में पाई हुई आटा गीला और बहती हुई देखकर वह रो पड़ता हैं ।

४. बरामदा तालीया से गूँज उठी।

५. मानव व्यक्तीत्व के सामन ही उसका वाणी का निर्माण दोहरा होता है ।

६. वही उड़ने का रफतार और दीशा तय करती है ।

७. मैं पिताजी से कहुँगा की आप आराम करो ।

८. उनकी बेटीयाँ मेरी बहने बन गयी ।

९. एक बार झरोका का और देखकर वह लंबा सास लेती है ।

१०. लडकि के पिताने रघुराज सिंह को कहा ।

उपयोजित लेखन

नीचे दिए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए :

(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का होना आवश्यक है)

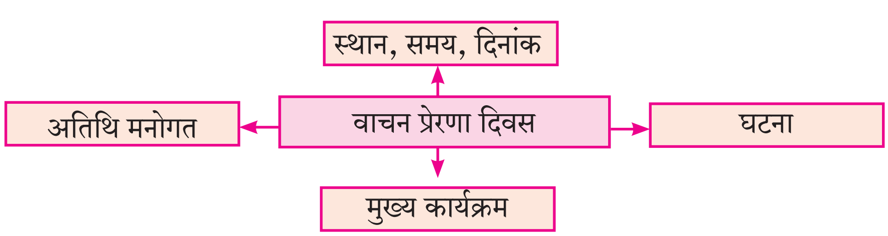

7H3XX8